

## पद ७

(रागः भैरवी – तालः धुमाळी)

माणिक प्रभुवर परतर सुखकर सुरवर ईश्वर दत्तप्रभो । भवहर  
गिरिधर दिगंबर सांबर हरिहरवंदित देव विभो । सच्चिद्वन  
निजभक्तप्रपालन संसृतिदारुणनाशन भो । जय जय जय जय  
जयप्रद स्वार्थद शर्मद नैजजनेषु हि भो ॥ध्रु॥ सज्जनमंडन  
दुर्जनखंडन दुर्मददंडनकारक भो । मणिगणहारविराजित राजित  
नाशितदितिसुतवृंदक भो । अत्रिसुत त्रिगुणात्मक यदुनृपवंदित हय  
हय तारक भो ॥१॥ मोहग्राहविदारक तारक मायाहारक रक्षक  
भो । स्वात्मसुखैकरसात्मक नतजननिजपददायक पोषक भो ।  
भवजलसिंधुसुतारक रुक्मिकशिपुविदारक तोषक भो ॥२॥  
मनोहरनंदन नंदनवनतरु जात कुसुमकृतहारविराजित । मायाकृत  
सदसन्मयस्थिरचरचालक ज्ञानविभूषणभूषित । हरिहरविधिमुख  
सुरगणकिंनरगंधर्वादिमुनिजनवंदित ॥३॥ निगमसमुद्रविशोधक

चिन्मयमूर्तिनिरामय भो भगवन् । अज्ञानांधःकारविनाशक  
हृदयप्रकाशक भो स्वामिन् । भक्तसमूहमनोरथसुरतरु योगिराज  
महाराजन् ॥४॥ सज्जनहृदयसरोरुहविस्तृतमध्यविहारिन्  
लक्ष्मीपते । निरंजन निर्गुण निरीह निराकृति अष्टविविध  
सुसिद्ध्यवनिपते । अंतर्दाहविशामक सद्गुरो नानारूपक  
लोकपते ॥५॥ द्विजकुलभूषण त्रिभुवनतोषण निशिचरकर्षण  
भूतपते । पंकजलोचन दैत्यनिकृंतन हे नारायण विप्रपते । सदोदित  
परिपूर्ण सकलार्तिनाशक धर्मसंरक्षण सिद्धपते ॥६॥ त्रिभुवननाथ  
स्वयं निर्नाथ सुकामकैवल्यधर्मार्थपते । आनंदाख्यप्रमेय निरुपम  
शांतिदयामय पृथ्वीपते । सकलमतस्थापक सन्नायक नानारूपक  
विबुधपते ॥७॥ हनुमदनुज नरकेसर्यग्रज द्विनेत्र द्विभुज दण्डधारक  
भो । बयांबातनय श्रीवत्सकुलोद्भव नेत्रकरंजितकज्जल भो ।  
नैजदासमनोहरपालक अखंडानंदविवर्धक भो ॥८॥ संस्कृत  
भाषासूत्रविगुंफितनवनवमणिमयहारमिदम् । ये नित्यमनेनार्चयन्ति  
प्रभुं सत्यं सुखिनः ते सुखदम् । ये प्रपठन्ति सुभक्तियुतास्ते प्राप्नुवन्ति  
मुनिवन्द्यपदम् ॥९॥